हितैषी - 2017

हिमालयन पर्यावरण, जलस्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा संस्था

निवेदन- हितैषी संस्था पर्यावरण संरक्षण एवं समाज परिवर्तन की एक छोटी सी कोशिश है। जिसमें संस्था ने महसूस किया कि गांव / समाज के विकास और उसके सुधार का कोई भी प्रयास या प्रयोग गांव-गांव / समुदाय को पूर्ण भागीदार बनाये बिना संभव नही हो सकता। गॉव/ समुदाय को जागरूक कर उनकी भागीदारी न केवल योजना बनाने में हो वरन् उसे क्रियान्वित करने और उसके मूल्यांकन की भी होनी चाहिए । विकास और सुधार के हर काम में ग्रामवासियों की सहभागिता नितान्त आवश्यक है। इसका सीधा सा अर्थ है। कि गांव वाले स्वंय अपना कार्यक्रम बनायें, उसे क्रियान्वित भी करें तथा बनायी रचनाओं की देखभाल भी करें और स्वंय परखें जांचे, कि उनकी स्वनिर्मित योजना कितनी सफल हुई और निरन्तर सुधार के उपाय भी ढूंढे । हितैषी सरकारी तथा गैर सरकारी विभागों संस्थानों से जानकारी, तकनीकी ज्ञान लेने देने का पूर्णतया प्रयास करता है।और गांव वालो को यह भी एहसास कराता है- कि वह उनके प्रयासों व श्रम का फल है। इसलिए यह उनकी उपलब्धि, वह उनकी अपनी संम्पदा है।

संस्था के सभी जागरूक साथी समाज के इस कार्य को एक आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाने के लिए कृत-संकल्पित है, और साथियों के मनमस्तिष्क में हमेशा एक प्रख्यात शिक्षाविद् वैल्थी फिशर का मंत्र गूंजा करता है- कि '' **इट इज वैटर टू लाइट अ कैन्डिल दैम कर्स द डार्कनस**''। अंधेरे को कोसने के बजाय दीया जलाना कहीं अच्छा है। दीया जलाकर अंधेरा मिटाया जा सकता है। क्षेत्र की समाजिक परिस्थितियों को देखकर यह सोच बनी कि समाज में व्यापत अंधेरेरूपी सभी विषमताओं को मिटाने के लिए एक दीया जलाएंगे तो हो सकता है- दस-बीस दिए और जल जायें। अन्ततः सब मिलकर इतनी रोशनी करेंगे कि अंधेरा मिट जाय। और दिये के प्रतीक के रूप में 23 सितम्बर 1998 को हितैषी- हिमालयन पर्यावरण, जल स्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा का उदय हुआ।

हम आशा करते है। कि समर्पित युवाओं के इस संघर्ष को (जो प्रत्यक्ष रूप से दिखता है) वास्तव में विकास की चुनौतियों से निपटने की भूमिका बना रहा है। अपना मार्गदर्शन देकर हितैषी नामक इस दिये को निरन्तर जलते रहने के लिए अपना सहकार प्रदान करेंगे।

आपका

किशनराना

सचिव

वार्षिक प्रतिवेदन

हितैषी– हिमालयन पर्यावरण जल स्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा संस्था जिला– बागेश्वर वि0 (गरूड़) के कत्यूर क्षेत्र में विगत 23 वर्षो से दो नदी घाटियों के क्षेत्रों में सामाजिक विकास, लिंगानुपात ,पर्यावरण संरक्षण (जल,जंगल,जमीन) पर्यावरण शिक्षा व सामाजिक कुरीतियों तथा गरीब बच्चों के शिक्षण कार्य चैरिटी के रूप में कर रहा है। उत्तर– दक्षिण दिशा में स्थित यह क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक रूप से अभी भी पिछड़ा हैं। पर्यावरण को बचाने का प्रयास नही हो रहा है। विकास सड़कों के गॉव तक ही सिमटा रहा है। प्रगति के नाम पर कुछ सड़कें बनी, और कुछ भवन खड़े हो गये –अस्पतालों के नाम पर, विद्यालयों के रूप मे, कार्यालयों की शक्ल में, ना आये डॉक्टर, शिक्षक, ऐसे समाज सेवी और जानकार अधिकारीओं जो की जनता की समस्याओं का निदान कर सकें।

क्षेत्र में बनी नई सड़कों पर लोग खूब यात्राएं करने लगे, साथ ही इन सड़कों की राह गांव छोड़कर नगरों में, भाभर में, देश में बसने लगे। पुरूषों की आमदनी तो बढ़ी। लेकिन उनमें नशे की लत भी फैली और बड़ी हो गयी। परन्तु स्त्रियों के हाथ खाली ही रहे बच्चें स्कूल कॉलेज तो जा रहे है, लेकिन अपने समाज व परिस्थितियों के प्रति वे संवेदनशील नहीं बन पा रहे हैं।

अभी भी कुछ गांवों में गाय, भैसों का दूध बिक तो रहा है, परन्तु घर के बच्चे दूध से वंचित भी हो रहे है। दूध बेचकर इतनी आमदनी नही होती कि दूध बेचकर वंचित बच्चों के लिए संम्वयक पौष्टिक आहार खरीदें जा सके। द्यौनाई घाटी तथा गोमती घाटी में कुछ युवा / लोग फल सब्जी व उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग कर फसलें उगा रहे हैं, परन्तु उनके लिए बाजार नही है, फसलों / अनाजों का मूल्य नही मिल पाता। बाकी बची कसर बन्दर, जंगली सुअर, बाघ का आतंक सब्जियॉ फसलों को बर्बाद कर किसान निराश हो रहा है। विकास का केवल सपना देख देख कर ही जी रहें है लोग।

संस्था ग्राम स्वराज लाने के लिए यह मानती है, कि सर्वप्रथम ग्रामीण अपने हक–हकूक, विकास तथा बुनियादी चीजों के बारे में समझें, जागरूक होवें इसके लिए हितैषी ग्रामीणों के बीच सदा बनी है। बुनियादी शिक्षा मजबूत होने के बजाय कमजोर होते जा रही है, पर्यावरण के प्रति लोग सम्वेदनशील नहीं है नशा (शराब, गुटका) घर–घर तक पहुँच गया है। भ्रष्टाचार – घूसखोरी से तंत्र बिमार है। विकास खण्ड गरूड़ का कत्यूर क्षेत्र खेती के लिए समृद्ध है, इसके बावजूद नई पीढ़ी खेती उत्पादन का काम नहीं करना चाहती। श्रम का न कोई मूल्य है और न उसे सम्मान दिया जाता है, होता है– श्रम करने वालों का केवल उपहास। ऐसी विषम परिस्थितियों में खेती– पशुपालन पंरम्परागत की जो अपने जल, जंगल, जमीन के प्रति समुदाय

का मोह भंग न हो, इन कार्यो से आजीविका का उपार्जन हो और नई पीढ़ी में अपने इन परम्परागत कामों के प्रति उपेक्षा न होकर सम्मान हो तथा पलायन कम हो इसके लिए हितैषी ने न्याय पंचायत भगरतोला में एक रचनात्मक कार्य का अनूठा प्रयोग किया, जिसके माध्यम से समाज उत्प्रेरित-सजग तथा ग्राम समुदाय इस कार्यक्रम में भाग ले रहा हैं। यह कार्यक्रम है-''**श्रम का सम्मान**'' - अर्थात् श्रम करने वाले लोगों को समाज में सम्मान देना- उनके कार्य पर, हुनर पर, ज्ञान पर। जिससे कि वे अपने परम्परागत काम को कम ना समझ कर सम्मान के साथ करें अपनी आजीविका सम्वर्द्धन में अपने कौशल का उपयोग कर सकें। इसके एवज में उनका सम्मान हो- उनके काम का सम्मान हो। इस अनूठे कार्य से नई पीढ़ी की युवक-युवतियॉ प्रेरित हो रही हैं। और जंगल, जमीन तथा श्रम के प्रति सम्मान बढ़ रहा है। भविष्य में इसका प्रभाव पलायन पर भी पड़ेगा।

श्रम का सम्मान

हितैषी ने पहाड़ी अंचल से पलायन को रोकने, पहाड़ की खेती, परम्परागत ज्ञान, एवं पर्यावरण को बचाने के लिए एक भगीरथ प्रयास किया है। जिसके माध्यम से परम्परागत बीज, खेती, जड़ी बूटियों के ज्ञान का खजाना, जल संवर्द्धन जैविक खेती, पशु पालन तथा पूरा पारिस्थितिकीय तंत्र व श्रम करने वाले के बीच का ताना बाना घनिष्ठता के साथ बना रहे। इसके लिए ''श्रम का सम्मान'' कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष किया जाता है। जो युवक/ युवतियां श्रम के बल पर अनूठा कार्य समाज में करते हैं। उन्हें चयनित कर समारोह में उनके काम के लिए सम्मानित किया जाता है। इसका सन्देश आज पूरे उत्तराखण्ड में जा रहा है। इससे श्रम करने वालों का सम्मान बढ़ा है। और खेती, जंगल, पशुपालन के प्रति मोह भी। अब इसे दोयम दर्जे का काम नहीं समझा जा रहा हैं। नई पीढ़ी अपने परम्परागत कार्यो को अपना रही है। जिस समाज, व्यक्ति को अपने काम पर गर्व होता हैं, वह समाज सदैव समृद्ध रहता है। श्रम के सम्मान से महिलाओं के कार्य बोझ को कम करने में विशेष मदद मिली है। अब पुरूष वर्ग भी महिलाओं के साथ बराबर का सहयोग कर अपनी आर्थिकी बढ़ा रहे हैं। और संतोष व खुशहाली के साथ आजीविका को चला रहे हैं। और अन्ततः परावलम्बी न होकर स्वालम्बी समाज का निर्माण हो रहा है। यही श्रम के सम्मान का उद्देश्य है।

2- स्कूलों में व्याख्यान- भूमण्डलीकरण के इस दौर में शिक्षा पाना आम व्यक्ति के लिए एक स्वप्न देखना जैसा हो गया है। जबकि शिक्षा व्यक्ति का बुनियादी हक है। दिनों दिन महंगी होती शिक्षा ग्रामीणों की साधनहीनता, दुर्दशाग्रस्त कालेजों में शिक्षण का अभाव और अंग्रेजी लिख बोल सकने की विवशता। बड़ी निराशाजनक परिस्थिति है। शिक्षा में नित प्रयोग, सरकारें उदासीन, नेताओं, अधिकारियों की महंगी व कमरतोड़ शिक्षा के बीच गरीब जनता अत्यन्त असहाय अवाक है।

इस दोयम दर्जे की शिक्षा को देखकर व आम ग्राम समुदाय की पीड़ा को समझते हुए स्वमी विवेकानन्द के 1893 के उस आहवाहन से जो उन्होंने अपने शिष्य को पत्र के माध्यम

से लिखा था कि- '' किसके हृदय में सम्वेदना है, उन बीसश करोड़ नर-नारियों के प्रति जो दरिद्रता तथा अज्ञान के गर्त में सदा पड़े रहे है। कौन चिन्ता कर रहा है उनके लिए। उन्हें न रोशनी मिल रही, न शिक्षा। कौन लायेगा जीवन में प्रकाश ? कौन घर-घर जायेगा उन्हें शिक्षित करने के लिए ? वे ही तो है। तुम्हारे भगवान! उनके बारे में सोचो, उनके लिए प्रार्थना करो''....''जब तक ये करोड़ों लोग भूखे और अज्ञानी बने रहेगें, तब तक मैं हर उस व्यक्ति को विश्वासघाती मानूँगा जो उनके खर्चे पर स्वंय तो शिक्षित हो गया, परन्तु उनकी रंचमात्र भी परवाह नही करता''। स्वामी विवेकानन्द के इस उत्प्रेरक- उन्मेषक आह्वाहन से प्रेरित होकर हितैषी विद्या निकेतन की बुनियाद 1998 में रखी - जिसमें गरीब परिवारों के बच्चें सहजता के साथ अध्ययन कर सकें- जिन्हें भय न हो महंगी तथा मोटी फीस, तथा सरकारी व गैर सरकारी दोयम शिक्षा का।

हितैषी विद्यानिकेतन के अतिरिक्त हितैषी संस्था ने हाईस्कूल व इण्टर कालेजों के बच्चों के बीच जाकर उन्हें जागरूक करने का भी एक सफल प्रयास विगत वर्षो से किया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से उत्तराखण्ड तथा देश के मूर्धन्य विद्वानों, वैज्ञानिकों तथा सफलतम व्यक्तियों को विद्यार्थियों के समक्ष लाकर उत्तप्रेरक व प्रेरित करने वाली उनके जिंदगी के सफलतम राज तथा विद्यार्थियों को जीवन में सफलता की ओर बढ़ने और उच्चशिक्षा के लिए उत्प्रेरित करने के लिए विशेषज्ञों के व्याख्यानों का कार्य किया इस कार्यक्रम का उत्साहजनक एवं दूरगामी प्रभाव हुआ विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के आग्रहपूर्ण आमंत्रण मिलने लगे कि ऐसे कार्यक्रम हों- इसी के बल पत्र हितैषी का यह सिलसिला चल रहा है।

हम हितैषी (हिमालयन पर्यावरण, जल स्रोत एवं पर्वतीय शिक्षा) संस्था के संचालक मण्डल के सदस्य, सेवा क्षेत्र के लोग, संघर्षरत कार्यकर्ता साथियों आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते है। आपने हमारा साथ दिया और स्वीकारा । सामाजिक असमानता, बुराइयों को दूर करने के लिए प्रतीक के रूप में हितैषी नाम का दीया जलाया।

हम इस संघर्ष में आपसे प्रेरणा- मार्गदर्शन और सहयोग की कामना करते हैं।

सधन्यवाद

हितैषी

द्यौनाई (गरूड़) बागेश्वर (263641)

उत्तराखण्ड